347 P
H 54

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1188
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 347

891.431
V191C

चुनार का राष्ट्रीय-झण्डा

प्रकाशक——

जनार्दन मिश्र ग्रामः—
लरछुट पोष्ट सीखड़।

लेखकः——

चौ० रामजी वैद्य रायपुरी,

चुनार।

प्रथम बार २००० | मूल्य ।॥

"खिचरी समाचार" प्रेस, तिरमोहानी मिरजापुर
में मुद्रित हुआ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 347
Date 8.12.71
GOVT. OF INDIA

चुनार का राष्ट्रीय झण्डा

बन्देमातरम् ॥ १ ॥

हम गरीबों के गले का हार बन्देमातरम् ॥
छीन सकती है नहीं सरकार बन्देमातरम ॥
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता जरूर।
कान में पहुंचा जहां झन्कार बन्देमातरम् ॥ हम ग० १ ॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिए इस वक्त पर।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्देमातरम् ॥ हम ग० २ ॥
जेल में चक्की घसीटूं भूख से हूँ मर रहा।
उस समय भी बक रहा बेजार बन्देमातरम् ॥ हम ग० ३ ॥
मौत के मुँह पर खड़ा हूं कह रहा जल्लाद से:--
भोंक दे सीने में अब तलवार बन्देमातरम् ॥ हम ग० ४ ॥
डाक्टरों ने नब्ज देखी सिर हिलो कर कह दिया: -
हो गया इसको तो यह आजार बन्देमातरम् ॥ हम ग० ५ ॥
ईद होली औ दशहरा सबरात; से भी सौगुना।
हमारा लाड़ला त्यौहार बन्देमातरम् ॥ हम ग० ६ ॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड जायगा।

॥ ३ ॥

आजादी के अरमान में जमाना हो गया।
इसाई, हिन्दू, मुसलमान छोटे बड़े सभी किसान।
बन्दे मातरम् तो हर दिल का तराना हो गया ॥ १ ॥
देखेंगे गोरों की शान खड़े हैं भारत के दरम्यान।
शिर तो हिन्दियों का गोली का निशाना हो गया ॥ २ ॥
प्रण दिल से है यह ठाना गान्धीजी को है छोड़ाना।
फिकर में असहयोग के भारत तो दिवाना हो गया ॥ ३ ॥
शर्तें जितने हैं हम ठाने उनको पूरे हैं कराने।
मुहब्बत गोरों का अब भारत से विराना हो गया ॥ ४ ॥
शिर को माता को चढाना जीवन को सुफल बनाना।
झगड़ा आपस में मिटाने का फरमाना हो गया ॥ ५ ॥
बुजदिल बुरा देखने वाले अपने होश को सम्भाले।
शान शीघ्रता से उनकी अब रवाना हो गया ॥ ६ ॥
आया गाँधी का जमाना शान शौकत का भूल जाना।
हुकूमत लन्दन का अब भारत में पुराना हो गया। ७।
हुकूमत गाँधी का चलाना सोने वालों को जगाना।
जवाहिर भारत का एक शेरे दिल मस्ताना हो गया ॥ ८ ॥

॥ ४ ॥

लन्दन का फैशन छोड़ कर सुदेशी पहिनोजी ॥ टेक ॥
भारत के सब नर नारी, बन देश के पुजारी।
चरखा चक्र हाथ में ले के सुदेशी पहिनो जी ॥ १ ॥
खेतों में रूई बुआवो, चर्खे से सूत बनाओ।
खद्दर करगह से बना के सुदेशी पहिनोजी ॥ २ ॥

काले कला को मन में लाओ नाम गोरों का मिटाओ।
मुर्दा भारत को जिला के सुदेशी पहिनो जी ॥ ३ ॥
सुन के माता की पुकार गर्दन लेकर हो तैयार।
शिर माता को चढ़ा के सुदेशी पहिनो जी ॥ ४ ॥
चिन्ता चित में जरा न लाओ नाम दुष्टों का मिटाओ।
लज्जा माता की रखा कर के सुदेशी पहिनो जी ॥ ५ ॥
गौरव भारत की महान कहता बेद शास्त्र पुरान।
अब गोरों से नाता तोड़ के सुदेशी पहिनो जी ॥ ६ ॥
प्रण दिल से अब यह ठानो कहना गान्धीजी का मानो।
प्रेम खादी से बढ़ा के सुदेशी पहिनो जी ॥ ७ ॥

॥ ५ ॥

किस नींद सो रहे हो हिन्दुस्तान वाले।
खन्दक में गिर पड़े हो ऊँची निशान वाले ॥
योधा तेरे कहाँ हैं राजा तेरे कहां हैं।
दशरथ के राम लछमन बाँकी कमान वाले ॥
नेशन बिगड़ गया है खाने खराबियों से।
बरबाद हो चुके हैं सब खान दान वाले ॥
फैशन पर मर रहे हो कपड़े विलायती हैं।
मल मल के हाथ रोवें ढाँके के थान वाले ॥
जागो तू प्यारे भाई ये कहां की नींद आई।
आवाज दे रहे हैं देशी दुकान वाले ॥

॥ ६ ॥

तुम शकल सुनो दे कान विपत ने घेरी।
भारत भूमि हो चली भस्म की ढेरी॥
ला ला के विदेशी माल घर क्यों भरते हो।
और गोरों के हाथ मुफ्त तबा होते हो॥
यों कर दी मात विदेशी की अब चेरी॥ तुम० ॥
अर्जुन से तीरोअन्दाज कहाँ हैं भाई।
और भीमसेन की सुध बुध क्यों बिसराई॥
कर कर के याद मुझे आती है रुलाई।
तुमने अपनी विद्या सकल भुलाई॥
यों कर दी मात अब विदेशी की चेरी॥ तुम० ॥
गाड़ी के बदले मोटरकार चलाया।
शेखी के खातिर बृथामाल गवाँया॥
यों कहैं किशुन लाज राख लो मेरी।
और भारत भूमि हो चली भस्म की ढेरी॥

॥ ७ ॥

जागो २ भारतवासी गहरी नींद के सोने वाले।
तुमको जरा नहीं है ध्यान कभी तुम भी थे गुणवान।
अब क्यों हो गए अज्ञान ऋषियों के नाम डुबाने वाले॥
सिगरेट सोडावाटर छोड़ो बिसकुट केग से मुख को मोड़ो।
बोतल शाम पीन की तोड़ो गङ्गा जल के पीने वाले॥

जब से मे डिशन हिन्द में आई सैकड़ों रोग साथ में लाई।
हैजा ताउन की मची दुहाई रोते जान गवाने वाले ॥
जरा जापान को देखो यार जिससे कोप रहा था जार।
मुल्क पर करते हैं जां निसार देश पर जान गवाने वाले ।।

॥ ८ ॥

खुदा ये कैसी मुसीबतों में मेरे भाई पड़े हुए हैं।
कदम कदम पै इनकी खातिर सितम के जाले पड़े हुए हैं॥
हमारे मेहमाँ जो बन के आए वो जुल्म करने लगे हैं हम पर।
गज़ब है क्या ये मकान वाले मकाँ के बाहर खड़े हुए हैं॥
हजारों बच्चों से बाप बिछुड़े तेग जालि रू हो के टुकड़े
सोहागिनों के सुहाग उजड़े घरों में ताले पड़े हुए हैं॥
खुदा तूही हो सहारा इनका रेहा तूँ कर दे इन जालिमों से।
जिला दे हमको या तू जला दे सरन में तेरे पड़े हुए हैं॥
गज़ब जो ढाया है हम पै मित्रों सहादत उसकी क्या पूछते हो
दिलका दिलमेंही वह पड़ा है दिखा दें उसको अड़े हुए हैं॥
राम अर्जुन कृष्ण का खूँ है बाकी अब भी बदन के अन्दर।
लेंगे बदला उन जालिमों से हमारे दिल में जड़े हुए हैं॥

—०—

आयुर्वेदीय कोष

प्रेस में छपरहा है !! शीघ्र निकलेगा !!! इसमें आयुर्वेद डाक्टरी तथा युनानोके समस्त औषध तथा पारिभाषिक शब्दों-उन शब्दों का जिनका आयुर्वेद से कुछ भी सम्बन्ध है यथाः— वाटनी' रसायन भौतिक विज्ञान व्याधिमूल विज्ञान इत्यादि शब्दों का केवल शब्दार्थ ही नही प्रत्युन उनसे सम्बन्ध रखने वाली समस्त विषयों का विस्तार पूर्वक बर्णन दिया है। आज तक अभी हिन्दी संसार में ऐसा कोष किसीने लिखने का साहस नहीं किया यह अपने ढङ्ग का एक अद्वितीय ग्रन्थ है पूर्ण परिचय ग्रन्थ अवलोकन ही से सज्जनों को ज्ञात होगा २००० से अधिक पृष्टों में ग्रन्थ की पूर्ति होगी २० वर्ष के घोर परिश्रम का यह प्रतिफल है कि यह ग्रन्थ आप सज्जनो को आयुर्वेद पठन पाठन में पूर्ण सहायता प्रदान करेगा। जो सज्जन १) अग्रिम भेज कर ग्राहक संख्या में अपना शुभनाम देने की कृपा करेंगे तो यह ग्रन्थ अल्प कालही में उनका सेवा करेगा १०० से अधिक भाषाओं के शब्द इस ग्रन्थ के अभ्यन्तर वर्तमान हैं जैसेः— संस्कृत, हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तैलंगी; कनारी; दक्खिनी; मलायम' नैपाली, हिमालयन पहाड़ी, लेवचा, अबी, फार्सी, तुरकी सिरियन, युनानी, इंग्रेजी, लाटिनी, जर्मनी फ्राँसीसी, चीनी, भुटिया, इत्यादि।

आयुर्वेदानुसन्धान ग्रन्थ माला
रायपुरी चुनार

फैसला होगा सरे दरबार बन्दे मातरम् ॥ हम ग० ७ ॥
बेड़ियों को भी बजा कर गावो बन्दे मातरम् ॥
जेल में जपते रहो शुभ नाम बन्देमातरम् ॥ हम ग० ३ ॥

—म—

तिरंगा झण्डा ॥ २ ॥

गाता हूं गाना राष्ट्र का झण्डे की शान में ॥ टेक ॥
त्रिगुण तेज को दर्शाता, है बीरों को हर्षाता,
अद्भुत जोश वह है लाताबीरों के गान में ॥ १ ॥
तिरंगा झण्डा है हमारा है हर दिल का सहारा।
वीरों का प्राण अधारा इस हिन्दुस्तान में ॥ २ ॥
विद्युत शक्ति है दिखाता मुर्दों में जान लाता।
कायरों को है भगाता जङ्ग के मैदान में ॥ २ ॥
चिन्ता चित का नष्ट कराता, ओज सौरभ को बढाता।
रङ्गत खूब ही है लाता गाने के तान में ॥ ४ ॥
जिस दम नभ मे है फहराता रौशन आलम में है लाता
विजय का सूचना सुनाता दुश्मन के कान में ॥ ५ ॥
पताका कृष्ण का बलदाता धूम रण में है मचाता।
उत्साह उग्र है बढाता वीरों के ध्यान में ॥ ६ ॥
विजयपताका लेकर वीरों दल शत्रू का अब चीरो
बलिदान करो जीवन को उसके ही शान में ॥ ७ ॥

—०—